

"दर्पण"

पदावली के सम्बन्ध में

इस भक्ति रस पूर्ण काव्य सरिता में अवगाहन कर उसके सम्बन्ध में दो शब्द लिखने का आदेश जब लेखक का हुआ तो मैंने अनुभव किया कि मुझ अपात्र के प्रति कक्कड़ साहब का कितना हार्दिक स्नेह है। वस्तुतः अनुभूति के अभाव में भक्ति रस धारा के इस प्रवाह में डुबकी लगा कर थाह ले आने की बात तो दूर—जल स्पर्श कर उसके गुणों की पहचान में मैं अपने को असमर्थ पाता हूँ। श्री कक्कड़ साहब जिन्हें मैं टी० ओ० साहब कहकर सम्बोधित करता हूँ भक्त साधक हैं। इस कलिकाल में जहाँ बुद्धि का अतिवाद हृदय की हरियाली को पूर्णतया चर गया है, भावुक जनों का अकाल सा पड़ गया है, वहाँ भावुक भक्त जन तो मिलते ही कहाँ हैं ? हमारे टी० ओ० साहब ऐसे ही सहृदय भक्त हैं जिनका मन राम के रंग में रंगा हुआ मस्ती का अनुभव करता है। उन्हीं के लिखे एक लेख को उन्हीं को सुनाते समय मैंने श्री किशोरी जी के प्रसंग पर उनके नेत्रों में अश्रु बिन्दुओं को छल छलाते देखा है। जहाँ आदि शक्ति रूपा श्री किशोरी जी कहती हैं जीव उनके बिना राम को पा नहीं सकता—उसकी गति नहीं। अतः वह चरण तो राम के पकड़े रहता है परन्तु देखता उन्हीं की ओर है-वहाँ टी० ओ० साहब के शरीर में स्थित जीव भक्ति भाव से गद्गद् हो रो पड़ता है यह तो मेरी स्वयं की देखी हुई बात है। और जब मेरी दृष्टि लेख के अक्षरों से उठकर उनके मुख पर पड़ती है तो वे संकोच में पड़कर आँसू पोंछते दिखाई देते हैं। ऐसे सच्चे भक्त के हृदय के उद्गारों के सम्बन्ध में जो काव्य के रूप में फूट निकले हैं मेरा अनुभूति हीन हृदय कुछ कह पायेगा ऐसा समझ नहीं पड़ता।

जहाँ तक मैंने जाना है इन भक्ति पदों के रचयिता उर्दू के अच्छे ज्ञाता हैं, परन्तु इन पदों को पढ़कर मुझे आश्चर्य हुआ कि उन्हें हिन्दी का भी अच्छा ज्ञान है वह चाहे अभ्यासवश ही क्यों न हुआ हो। बात यह है भक्त कवियों के लिए भाषा और छंद भावाभिव्यक्ति में कभी बाधक नहीं हुए। जो 'प्राकृत जन गुन–गान' करने में ही कवि कर्म सीमित कर देते हैं उनके लिए भाषा, छन्द और अलंकारादि की वाह्य सीमाएँ ही सर्वस्व हो जाती हैं जिनको तोड़कर स्वानुभूति को अभिव्यक्त करने का साहस भावुकता के अभाव के कारण उनको कभी होता नहीं। इस पदावली में एक भक्त के सच्चे उद्‌गार मिलेंगे। साहित्यकार की भाषा में इन पदों में कलाकार की सचाई है; इनमें अनुभूति के साथ छल नहीं किया गया। इन पदों में जहाँ एक ओर श्री राम, सीता जी तथा हनुमंत लाल जी के प्रति विनय भावना है, वहाँ दूसरी ओर मधुर भावना का भी सरस चित्रण है। 'सखी सुनु इक अचरज की बात' पद इस दृष्टि से पठनीय है। आत्मा की विरह व्याकुलता देखिए :—

"एक बार कैसेहु पिय पाऊँ दिन होवे या रात।
नेह अली नहिं चरण छाड़िहौं सरित–सिन्धु की भाँति ॥"

'दिन होवे या रात' और 'सरित–सिन्धु की भाँति' व्यक्त भाव मनन की अपेक्षा रखते हैं।

प्रेम की अनन्यता का एक रूप भक्त के शब्दों में देखिए :—

माने नहिं बिनु देखे जियरवा
ऐसी हठ कछु ठान लई है
धसत न कैसेहु रूप दुसरवा।

कहीं कबीर की सी रहस्यमयी बानी के भी दर्शन होते हैं :—

झलके हिय के हिये छिपाऊँ।
रस अनमोल भरे हैं याते नित्य सुहाग मनाऊँ।
सत्य कहौं हैं वुइ पति मोरे, तउ पतिव्रता कहाँऊ।
निर्गुण ब्याहि कर्म मन बाणी, सरगुन माँग भराँऊ।

रूपक अलंकार की छटा के साथ भक्त हृदय की कामना शृंगार-मय रूप 'रघुवर हिय हिंडोल हमार' पद में देखने योग्य है। विशेषता यह है कि अंलकार के लिए प्रयत्न नहीं दीख पड़ता। ऐसा अनुभव होता है कवि के हृदय में हिंडोले का चित्र है और सहज भाव के साथ उसने अपने भक्त हृदय की कामना को रूपक द्वारा व्यक्त कर दिया है।

कवि जगज्जननी सीता जी को ब्रह्म की आदि शक्ति मानता है जिसके विना जीव का उद्धार नहीं हो सकता क्योंकि "जिन्ह से विमुख रहे भव भटकत जिय की जरन न जाहिं" और "संमुख होत दिव्य सम्पत्ती द्वारे खड़े कमांहि॥" अंत में कवि 'मातु जानकी' से विनय करता है :—

'स्वामिनि हाथ पकड़ कह दीजे, नेह अली करुणा निधान की।'

श्री हनुमंत लाल जी के प्रति भी कवि की अचलभक्ति है। ठीक भी है राम भक्ति का चरम आदर्श हनुमान में है और कोई भी रामभक्त अपनी भक्ति साधना में उनको एक ओर करके आगे चल भी कैसे सकता है? अतः कवि ने कई पद हनुमान की विनय के लिखे हैं जिनमें अपने अवगुणों के कथन के साथ हनुमान स्तुति, और सरल हृदय के साथ अवगुणों पर ध्यान न देते हुए 'बहियाँ गहने' की प्रार्थना की है।

एक विशेष बात और—उर्दू छन्दों में कतिपय प्रचलित उर्दू शब्दों के प्रयोग के साथ भक्त कवि ने अपने भावुक हृदय की भक्ति-भावना को बड़ी मधुरता के साथ व्यक्त किया है :—

'जले, पर न दीखे, मुहब्बत वही है' छन्द पढ़ने योग्य है।

जिसे दिल दिया उससे कुछ भी न चाहे
कनाअत नहीं, बादशाहत वही है।

निम्न शेरों में कितनी मार्मिकता परन्तु सरलता के साथ भावुक भक्त कवि ने अपने हृदय को खोल कर रख दिया है।

अली नेह तेरे भजन तो सिफर हैं, यह क्या कम जो तुझ पर उचटती नजर है।

'भजन के सिफर होने' से अभिव्यक्ति में बड़ा बल आगया है।

'उचटती नजर' का भाव भी अपना न्यारा है।

अधिक क्या—स्थानाभाव से यत्र-तत्र से कुछ बातों को दिखाने का प्रयास किया है। वास्तविकता तक तो भावुक भक्त जन ही पहुँच पायेंगे जिनके राम अनुभूति के विषय हैं तर्क और बुद्धि के नहीं। परन्तु इस बहाने हमने भी कुछ राम चर्चा कर लेखनी को धन्य बनाया-यही क्या कम पुण्य है। पदावली आपके सामने है। मुझमें समीक्षा की सामर्थ्य कहाँ ? न इस भाव से ये शब्द लिखे ही हैं।

संत हंस गुन-गहहिं पय परिहरि वारिविकार।

हिन्दी विभाग
दयानन्द वैदिक कालेज
उरई।
१५-११-६१

प्रकाशक
म० ला० पाराशर
एम० ए० लेक्चरार

सर्वेश्वरी श्री चारुशीले वन्दना

यस्याः शरच्चन्द्र विनिन्द वक्त्रम्
यन्नूपुरं श्रीतरवानुकारि
तां चन्द्रकान्तातनुजां सुशीलाम्
त्वां नौमि सर्वेश्वरि चारुशीले ॥१॥

आगत्य ते पाद सरोज मूले
ब्रह्मादिदेवा रघुनन्दनस्य
सेवा बिधिं तेहि पठन्ति सर्वे
त्वत्तो हि सर्वेश्वरि चारुशीले ॥२॥

दिने दिने देवि गृहेत्वदीये
आयान्ति गन्धर्वजना हि सर्वे
प्रशिक्षणायाखिल ताल भेदान
त्वत्तो हि सर्वेश्वरि चारुशीले ॥३॥

विलोक्य जीवान्भव दुःखदुःखितान्
दयार्द्रचित्तं विहितं हि भूमौ

संस्थापितो वै श्री सम्प्रदायः
त्वया हि सर्वेश्वरि चारुशीले ॥४॥

महीजया सङ्ग विहार काले
नवानुरागेण वयस्कृतेन
विलोकिता राम वरेण नित्यम्
त्वमेव सर्वेश्वरि चारुशीले ॥५॥

श्री सीतया सङ्ग विहार काले
यदा परिश्राम्यति रामचन्द्रः
संवीज्यते देवि सुचामरेण
त्वया हि सर्वेश्वरि चारुशीले ॥६॥

श्री राघवेन्द्रो जनकार्यशक्तो
विश्राम हेतोरयते यदान्तः
प्रवेश्यते स्वापगृहे त्वयैव
तदा हि सर्वेश्वरि चारुशीले ॥७॥

श्री चारु शीला स्तोत्रम्

शरत्पूर्ण चन्द्र श्रियो हारि वक्त्रम् तनु श्रीजित स्वर्ण दीप्तिश्च यस्याः
नखश्री जितानेक हेमस्थहीरं श्रयाऽऽरुण्य हृच्चारुशीला पदाब्जम्

तडिद्वत प्रभात्यभ्र नोलाम्बरे या श्रुतेः सामयन्नूपुरोत्थं निशम्य
भवस्थान संरोध शक्तस्त्रिदेवाः श्रये सर्वदा चारुशीला पदाब्जम्

सुगन्धर्व गाने प्रिया प्रेम्णि लब्धा पदार्चा सुसाकेत सर्वाधिकारे
कृपा पात्रताऽऽचार्य तात्वेकमात्रं श्रये सर्वपा चारुशीला पदाब्जम्

श्रियः प्राणनाथः प्रियाया मुखाब्जं स्मितैः दृष्टिकोणै युतं वीक्षितुं याम्
सतर्पं मुहुर्वीक्षते रास काले श्रये सर्वगा चारुशीला पदाब्जम्

स्वलोकस्थितं ख्यापितुं रासकाले ददौ ग्रन्थि मेषा प्रभोरुत्तरीये
तथा तामपश्यच्च साकेत धाम्नि श्रये सर्व कामप्रदां चारुशीलाम्

ग्रहीत्वा सखीः सप्त भक्त्या स्वभृत्या प्रिया प्रेय सोरंति सेवा सुलग्ना
यदान्तर्गतौ द्वाय्युंषः संप्रतीक्षा श्रये त्वाम्ब दास्य प्रदां चारुशीलाम्

प्रियाप्रेयसो रंग शृङ्गार भूषां विचित्रं वरिष्ठं यथावद्विधात्रीम्
अगद्यं विभावं तयोर्बोधयन्तीं शृयेत्वाम्ब सर्वेश्वरीं चारुशीले

क्वचिच्छत्रुजित् गेहनीं चन्द्रकान्तां सुम ताऽञ्जना स्वीय पुत्रस्यशीलम्
तथा तद्गुणैश्वर्यं भावं निवेद्य स्वकीयप्रहा श्री सखीसू वभाषे

सखि श्री कृपातोऽस्ति मे दिव्य सम्पत् परं यादृशी ते सुता चारुशीला
महीजा प्रियाग्रया तथा चेत्सुता मे मदङ्के गता लालिताम्बेति ब्रू यात्

निशम्येदृशीं गां सुवात्सल्यपूर्णां तदङ्कं स्थिता चारुशीलाऽऽह गुह्यम्
अहं तेऽम्ब पुत्रस्सदा रामकार्ये द्वयोः सेवने रूपमित्थं धृतं मे

रहोरीति निर्वाहणे सेवनस्य मया धार्य्यते रूप बाहुल्य मेवम्
न मय्यम्ब भेदो हनुमत्स्वरूपे निशम्येदृशीं गां सहर्षाऽञ्जनाऽभूत्

इदं सर्वेश्वर्याः पवनतन स्यामितगते द्वयोर्मात्रोश्चैवयम् स्तवनमुदितं चारुयश सोः
पठन्वा शृण्वन् वा हरिशरण लब्धिः सुमहतां कृपा दृष्टिर्भूयात् द्विज सदनु गे रामचरणे

सर्वेश्वरी श्री चारुशीला स्तोत्रम्

यदीयं मनोज्ञं मुखाब्जं विलोक्य, प्रभानिर्जितो लज्जते शारदेन्दुः,
शरीरद्युतिः स्वर्णवर्णा च यस्याः, भजे तां नु सर्वेश्वरीं चारुशीलाम् ॥१॥
शुभा रुक्मराशिस्थिता हीरकाणां यथा दृश्यते विशति भंसमाना,
तथैवारुणा यन्नखानां सुकान्ति, भंजे तां नु सर्वेश्वरीं चारुशीलाम् ॥२॥
स्मरन् यत्पदाब्जारुणाभां विभातां, प्रभातेऽरुणः सङ्कुच्वत्यात्मचित्तो,
प्रभाभासमानामहं श्रीवयस्यां, भजे तां नु सर्वेश्वरीं चारुशीलाम् ॥३॥
लसत्कोटि विद्युल्लताभिः प्रभाभि, र्यथा भाति नीलप्रभं मेघवृन्दम्,
तथा यत्तनुश्रीयुतं नीलवस्त्रं, भजे तां नु सर्वेश्वरीं चारुशीलाम् ॥४॥
त्रिदेवाः सुवेदध्वनि प्राप्तसाम्यं, मुदाऽऽकर्ण्य यन्नूपुराणां निनादम्,
वभूवुर्भवे स्वक्रिया शक्तिमन्तो, भजे तां नु सर्वेश्वरीं चारुशीलाम् ॥५॥
यदीयानवद्योत्तमां गानविद्यां, स्वयं शिक्षते दक्षगन्धर्ववृन्दम्,
सदा रामसीता सपर्या प्रवीणां, भजे तां नु सर्वेश्वरीं चारुशीलाम् ॥६॥
प्रभोः प्राणनाथस्य पादारविन्द, सुसाकेत सेवा प्रदानाधिकारे,
जयत्येकमात्रं तु याऽऽ चार्यवर्य्या, भजे तां नु सर्वेश्वरीं चारुशीलाम् ॥७॥
प्रियायाः सहासां कृपादृष्टिमाप्तुं, रमा वल्लभो रासकालेऽ नुनेतुम्,
यदीयं मुखाब्जं प्रपश्यत्यजस्रं, भजे तां नु सर्वेश्वरीं चारुशीलाम् ॥८॥

यया त्वेकदा श्रीपतेरुत्तरोये, भुवः श्रेयसे ग्रन्थिरेका निवद्धा,
पुनः सैव साकेतलोकेऽपि दृष्टा, भजे तां नु सर्वेश्वरीं चारुशीलाम् ॥९॥
युता सप्तमुख्यालिभि र्या प्रभाताद्, विधत्ते प्रियैकान्त सेवामजस्रम्,
प्रियायाः प्रभोरन्तरङ्गां वयस्यां, भजे तां नु सर्वेश्वरीं चारुशीलाम् ॥१०॥
रजन्यां प्रियं सप्रियं रामभद्रं, सुप्रापय्य शय्यागृहं प्रेमभावात्,
परावृत्य द्वाराद विधत्ते प्रतीक्षां, भजे तां नु सर्वेश्वरीं चारुशीलाम् ॥११॥

वसन्त तिलका वृत्तम्

मताऽञ्जना स्वतनयस्य गुणान् सभावं,
विवृण्वतीदमवदत् किल चन्द्रकान्ताम्
त्वत्पुत्रि श्री धरणिजाग्र सखीं सुशीलां,
सर्वेश्वरीं स्वहृदि लालयितुं समीहे ॥१२॥
वात्सल्यभाव परिपूर्ण मिदं सुवाक्यं,
श्रुत्वा ऽतिनीति निपुणा ननु चारुशीला,
कर्णोऽजपञ्जननि मा कुरु भेदभावं,
जानीहि रामदयितं खलु मार्गतिं माम् ॥१३॥

मालिनी वृत्तम्

जयति जगति धीमान् भक्तिमानाल्जनेयो'
रहसि प्रभु पदाब्जं सेवितुं यो ऽति रागात्,
जननि जनकजाया अन्तरङ्गान्तरङ्गा,
सकल सखिमणिः श्री चारुशीला वभूव ॥१४॥

हमारे हनुमान जो सब से न्यारे।
न जानामि शङ्कर सुअन पंच आनन
न जानामि श्री केशरी कीर्ति वर्धन
पवन पूत, रवि राहु, मघवा के मारे ॥१॥ हमारे
मधुर हव्य पा अञ्जनी जिनकी माता
जो रघुलाल जी के हैं वीमात्र भ्राता
वही जग जननि जानकी के दुलारे ॥२॥ हमारे
कसे पीत अम्बर, लसे क्रीट कुन्डल
गदा तूण धनुधर, सदा रूप मङ्गल
हैं साकेत के चिन्ह नख सिष सँवारे ॥३॥ हमारे
जो कारण हैं सुग्रीव राघौ मिताई
जिन्होंने विभीषन की बिगड़ी बनाई
जिन्हें देखि रावन के बल—वीर्य हारे ॥४॥ हमारे
विविध रूप धर नित्य सेवा में रहते
प्रिया प्राण प्रीतम के गुण कहते सुनते
भरत लाल जी के हैं प्राणों से प्यारे ॥५॥ हमारे

वही नित्य करते हैं श्री राम लीला
वही तो हैं सर्वेश्वरी चारुशीला
अवध और मिथला के आँखों के तारे ॥६॥ हमारे

हुए बस में सेवा से रघुबर तुम्हारे
सिया जू भी मानें कृपा के इशारे
दोहाई दोहाई मेहरवाँ हमारे
यह जीवन की नौका लगा दो किनारे
अली नेह अब है तुम्हारे सहारे ॥७॥ हमारे

× × ×

बिनती सुनहु प्रभु हनुमान।
अवध राम विमात्र भ्राता अञ्जनी के प्रान ॥१॥
सकल गुण ऐश्वर्य बल विज्ञान विद्या ज्ञान।
प्रिया प्रीतम प्रेम के परिपूर्ण सिन्धु महान ॥२॥
कृपा पात्र विदेह नन्दिनि को न तुम सम आन।
रिनी सेवा से कियो रघुवंश को तजि मान ॥३॥

वेद नारद शारदा नहिं सकत कीरति गान ।
देखि हर्षि चरित्र चुप रहि जाहि राम सुजान ॥४॥
एक बार बिलोक देहु तो कहउँ शपथ प्रमान ।
नेह अलि, बलि, जाउँ पीपुर जिमि पिया को बान ॥५॥

× × ×

तोहरी रुचि रुचि लेउँ वलइयाँ ।
लषन राम सिय प्राण पियारे श्री हनुमान गुसइयाँ ॥१॥
भजन भाव कछु जानौं नाहीं गुणहू एकौ नइयाँ ।
कैसे कहौं नाथ मोहिं दीजे परे रहन निज ठइयां ॥२॥
तुम हठि कृपा कीन्ह औरन पर मौन हमारिहि दइयाँ ।
भरो समुन्दर को का भरिये निर्धन कीजे रिनियाँ ॥३॥
सब प्रकार तुम समरथ तुम्हरी रुचि राखैं सिय सइयाँ ।
तुम्हारी कृपा मिलहिं बिछुरे अरु बिरहिनि हिये बधइयाँ ॥४॥
मोरे शरण नाथ जौ नेकहु केवल तोर पन्हइयाँ ।
तौ अवगुण पर ध्यान न दीजे गहिये मेरी बहियाँ ॥५॥

बिनु सेवा प्रभु द्रवहु दास पर तोर मनाऊँ पइयाँ ।
नेह अली कहँ अभय करीजै रखि निज बाहिन छइयाँ ॥६॥

× × ×

गरजहु एक बार हनुमाना ।
देखि दास के दुःख दयानिधि द्रवहु बेगि भगवाना ॥
काम क्रोध मद लोभ मोह मत्सर बैरी बलवाना ।
भेदहिं हर्ष विषाद दिसा दसहू से हौं अकुलाना ॥
सब प्रकार प्रभु अधम मलिन मन हीन नीच मैं माना ।
पै जाके अनन्य गति तोरी तहँ औरै तुअ बाना ॥
शरण परे की लाज रखहु प्रभु देहु इहै बरदाना ।
नेह अली सिय राम चरण रति जनम जनम जहँ जाना ॥

× × ×

जिनकी कृपा द्रवहिं धनुधारी ।
ते हनुमंत बुद्धि बल गुणनिधि अग्रज्ञान भयहारी ॥१॥
पिता राम रघुनाथ जगज्जननी सीता महतारी ।
ऐसे पूत सपूत हनूमत के चरनन बलिहारी ॥२॥

दास उरिन कहुं सुने न दीखे तऊ स्वयं असुरारी ।
अतिशय कृपा प्रिया की लखि भे रिनियाँ अवध बिहारी ॥३॥
राम दास अरु राम काज लगि झेले संकट भारी ।
तीनहु काल कतहुं कोउ नाही तुम समान उपकारी ॥४॥
मेघनाद करि कोटि जतन जब लीन्ह शरण हिय हारी ।
बेद धर्म रक्षा हित आपुहि बँधे लंक गढ़ जारी ॥५॥
तुम हठि कृपा कीन्ह औरन पर देखि तिनहि अधिकारी ।
सब बिधि पतित जानि मोहिं बैठे मौन साधि वृतधारी ॥६॥
नाथ नाथ तव पतित उधारे जड़,पशु, अरु नर नारी ।
नेह अली तिन से घटि नाहीं पाहि पाहि गिरिधारी ॥७॥

× × ×

बन्दौं बिबिध बिधि दोउ चरन ।
भरत हनुमत लषन सेवित गौर सांवर बरन ॥१॥
हरन भव भय भ्रम भयंकर भाव भक्ती भरन ।
पतितता जिन्ह देखि लाजै तिनहुं पावन करन ॥२॥

दंभ दोष दरिद्रता दुख दैत्य दानव दरन ।
जिनहिं जननी जनक जानत जाय जिय की जरन ॥३॥
सहज नीके लगहु जाँचत इहै हरिसरन ।
द्वार ते जनि बिमुख फेरहु चिन्ह चौबिस धरन ॥४॥

× × ×

जय निमिबंस किसोरी जी की ।
सदा सुहागिनि अति प्रिय पी की ॥१॥
जय जय जयति बिदेह लली की ।
प्राण प्रिया रघुबीर बली की ॥२॥
सब बिधि हित मिथला जाती की ।
पियहिं बुझावत अरज सभी की ॥३॥
हरीशरण के जानहु जी की ।
अब जनि ओट होए छबि पी की ॥४॥

× × ×

निछावर सिय चरनन की नाहिं ।
एक एक रेखा पर लोकप कोटि कोटि बिक जाहिं ॥१॥

जिन्ह से बिमुख रहे भव भटकत जिय की जरन न जाहिं ।
संमुख होत दिव्य सम्पत्ती द्वारे खड़े कमाहिं ॥२॥
जिनकी सुन्दरता कोमलता को कहि कुकवि कहाहिं ।
सेष गनेश महेश थके तउ बरनत पार न पाहिं ॥३॥
हरीशरण को भटकै बसिये इन चरनन की छाहिं ।
इयहिं मिलेंगे सजन सांवरे जिनकी लम्बी बाहिं ॥४॥

× × ×

सुनिए मेरी मातु जानकी ।
दोउ पद पदुम मनाउँ बिबिधि बिधि प्राण प्रिया रघुवर सुजान की ॥१॥
जद्दपि सब बिधि पतित नारकी रहनि सहनि सूकरी स्वान की ।
नाम रूप गुण गड़े हिये नहि औरन की गम तिल समान की ॥२॥
आपु सहित रघुनाथ चरण तजि सत्य कहौं मोहिं गति न आन की ।
स्वामिनि हाथ पकड़ कह दीजे नेह अली करुणा निधान की ॥३॥

× × ×

दाशरथी दीन की दरिद्रता दरो
हेरि हेरि हँसि हँसि हरि हीनता हरो
भव भय भ्रम भंजि भक्ति भावना भरो
क्रूर जानि देहु दूरि द्वार पै डरो
भोर भए संत कोऊ भानि रावरो
अञ्जनी के लाल सौं अनन्यता अरो
नेह अली तजि सकोच भाय सोइ करो

× × ×

जय राम ब्रम्ह अवतारी
निर्गुण साकेत बिहारी
प्रमदा बन नूपुर धारी
सखियन संग रास संवारी
सिय मुख अँखियाँ मतवारी
याते चितवनि अति प्यारी
नीके जानहु दिलदारी
रीझहु सुठि प्रेम बिचारी

जय बिरही कामी भारी
नर नाट कुशल बलिहारी
बिगड़ी तुम लेहु संभारी
गुजरी सब देहु बिसारी
माना नहिं हूँ अधिकारी
क्या गति कोइ और हमारी
नहि सोचिय अब धनुधारी
प्रिय नेह अली बलिहारी

× × ×

रघुबर नीके जानहु जी की।
तदपि बिनय कछु करन चहौं, बलि,
जो रुचि देखौं पी की ॥१॥
जेहि गुण रीझहु एकौ नाही रहनि निराघम ती की।
गाल गूल अरु दंध अनेकन सेवा सब बिधि फीकी ॥२॥

एतेहु पर पिय रगड़ निरंतर गति चाहौं मुनि तीकी ।
नेह अली तजि सकोच करिबी जानि परै जो नीकी ।।३।।

× × ×

दीन पै द्रवहु न कीजे देर ।
नाथ काल को नहीं भरोसों हौं माटी को ढेर ।।१।।
हौं मैं परो बीच नाना भ्रम काल करम के फेर ।
तापै भाव भजन नहिं एकौ निपट केर को केर ।।२।।
जौ नेकहु निज होत मोहिं बल तौ नहिं करतेऊँ टेर ।
सप्ताबरन भेदि अउतेउँ करि काल करम को जेर ।।३।।
तोहिं सीय पिय, छांड़ि मोरि गति औरु न कोउ दिलेर ।
नेह अली, बलि, बल जिन्ह के तुम तिनहिं कृपा करि हेर ।।४।।

× × ×

घर घर अनुपम अवध बघायो ।
किन्नर गाइ अपसरा नार्चाहिं सुरन निसान बजायो ।।
चैत मास नवमी तिथि उदया मध्य दिवस भरि आयो ।
कौसिल्या श्री दशरथ घरनी सुन्दर बालक जायो ।।

कोउ कह आपु प्रगट भे आई शिव मन जिनहिं चुरायो ।
कोउ कह लंका बंका शंका रावण उर थर्रायो ॥
नृप रानी तेहि अवसर रुचि रुचि सरबसु दान करायो ।
नेह अली हमहूँ जो पायो आजु सामुहें आयो ॥

× × ×

श्री मिथला में बजो बधायो ।
जो सुनि मन जोगी ज्ञानिन को आज दिखात लुभायो ॥
नवमी तिथि बैसाख मास उदया घड़ि पल शुभ आयो ।
हनि दुन्दभी गगन से देवन दिव्य सुमन बरसायो ॥
आदि शक्ति प्रगटी सित लागत सीता नाम धरायो ।
उमड़ गुमड़ बरस्यो जग जननी जननी तपन बुझायो ॥
अष्ट सखी सेवित सिंहासन राजत दरस दिखायो ।
गद्गद् कण्ठ नयन जल दम्पति बहु बिधि बिनय सुनायो ॥
लीला हेतु भई नृप कन्या कहाँ कहाँ करि गायो ।
नेह अली मिथला पति धरनी धाइ हृदय लपटायो ॥

× × ×

मैं बन आन खेलन जाउँ ।
ढूँड़ सहजहिं लेहिं मोहिं करि जतन कहूँ लुकाउँ ॥
बिटप तरुतर लता ओटन निसा जानि छिपाउँ ।
धाइ धरहिं प्रकाश कहि कहि हारि मान लजाउँ ॥
दिनहिं देखत भ्रमर पाछे लगत घेरहिं ठाउँ ।
आजु ते नहिं लेप चन्दन केसरादि लगाउँ ॥
मातु कौसिल्या कहत हंसि लाल के बलि जाउँ ।
नेह अलि अब बड़े भइया भये धनुष धराउँ ॥
× × ×
मइया सोइ बिशाल अति भारी ।
भृगुसुत प्रति पठयेहु जेहि पूजन हेतु पिनाकु पुरारी ।
खेलत छुअत सीय पट कलथेउ सूख पात अनुहारी ॥
सब बिधि पूज्य ईश गौरी सम समुझि बूझि सुकुमारी ।
बहु बरबिनय कीन्ह सिय धनु सन छमि बड़ि चूक हमारी ॥
सो नहिं डुलेउ परेउ सहमेउ महि जिमि पन्नग उरगारी ।
इत उत चितै सीय सहजहिं निज कर आसन बैठारी ॥

भई चकित चित अति महतारी बोलेउ राउ हंकारी ।
गद्गद् नयन नीर तनु पुलकित दम्पति करहिं विचारी ॥
नेह अली तेहि अवसर नारद समुझायो नर नारी ।
सीते आदि शक्ति धनु दमनू राघौ अवध विहारी ॥

× × ×

मुनि मन मुदित मग महँ जाहिं ।
जतन जेहि लग किये कोटिन मोरि मूठी माहिं ॥
बेद अरु त्रैदेव जिनकर आदि अन्त न पाहिं ।
चरण चाँपि सुबन्धुवर दोउ भजन प्रभाव दिखाहिं ॥
लरत भिरत सुबाहु आदिक राम वदन समाहिं ।
सिद्ध तापस जोगि तिन्हके भूरि भाग सराहिं ॥
छुअत पद रज शिला नारी भई कौतुक माहिं ।
जासु इक इक अँग पर रति शत शची बलि जाहिं ॥
पुरी पैठत प्रीति पावन सुमिरि पिय मन माहिं ।
नेह अलि इत उत पिनाकहिं खोज पूछत जाहिं ॥

× × ×

मिथला युगुल कुंवर वर आए।
बिचरहिं चहुं दिसि बीथिन बिच बिच घर घर कहर मचाए॥
जिहि चितवहिं तिरछे नयनन सो जनु बिनु मोल बिकाए।
हमरी तुम्हरी कौन कहै जोगी ज्ञानी बौराए॥
श्याम गौर सब अँग मनोहर नख से सिष तक भाए।
राम लषन सखि नाम सुहावन नृप दशरथ के जाए॥
कानन मणि मय कनक फूल चमकत रवि कोटि लजाए।
घुघराली जुलफों पर टोपी जरी अजब रंग लाए॥
सिय हँसि कह वह रूप हमारो बरबस जिव लपटाए।
नेह अली टूटे धनु चलिबै अवध निसान बजाए॥

× × ×

सखी फूलो फूलो मन मोर।
कंचन बन बिचरत देखेउँ नटवर घनश्याम किशोर॥
चंचल चपल चहूँ दिसि चितवत चितहू को चित चोर।
सीय कहेउ सखि गुण गण गाइय आपनि आपनि ओर॥

दशरथ सिंधु कौशिल्या सरिता पावन प्रेम हिलोर ।
कोउ कह खीर खाइ इन जाए ऐसो सुनिये शोर ॥
कोउ कह अति कोमल हैं केहि बिधि मारे निसचर घोर ।
कोउ सुधि करि गौतम धरणी की भाखैं गई बहोर ॥
कोउ ह्वै प्रेम विभोर बतावैं उन छबि काम करोर ।
कुल मरजाद मान रहि गइँ कोउ मौनहिं मनहिं मरोर ॥
कोउ कह शिव मन मानस हँसा आगम निगम निचोर ।
नेह अली मैं जानौं नीके बिनु सिय कृपा कठोर ॥

× × ×

सुनो सखी सोइ सुकुमार सलोना ।
बिचरत बन्धु सहित बगिया में, लिये सुमन कर दोना ॥
कालि कहर सब नगर मचायो, आज दई का होना ॥
इनकी चितवनि हँसनि बिलोकन, जनम जनम को रोना ॥
नेह अली सिय जू से इनकर, चलिहै न जादू टोना ॥

× × ×

बिनु बात बिदार हिया हमरे।
नहिं पावहु गे मिथला में लला
अब बिचरन तुम डगरे डगरे॥
अब हीं हम जाइ बिनय करिबै
पद पंकज सिय पकरे पकरे।
हँसि हँसि हरि की हरिता हरिबै
फुल बगिया में गजरे गजरे॥
सौगात सखा स्वामी देखि हैं
तुम्हरे हिय पर उभरे उभरे।
स्वामिनि के आगे नेह अली
बिकिहौ बिनमोल अवध बनरे॥

श्री मिथला बाजार

मैं वस्तु अनोखी लाया हूँ, रघुनन्दन कर लीजे स्वीकार।
परब्रह्म, जीव का मिथला में, दिल खोल के हो जाए व्यापार॥
सौमित्र आप हैं जीवों की, नौका के गुरुवर कर्णधार।
कर गहि संमुख प्रभु कर दीजे, मैं पायँ मनाऊँ लाख बार॥
जो हूं वह नहीं जो नहिं वह हूँ, नहिं विठलाया दिल में रकार।
मैं शून्य शिषर पर हो सवार, परपंच प्रेम करता प्रचार॥
इस भेष पिटारी में बाँधे, हूँ प्रभु बदनामी का कबार।
निर्लज्ज है व्योपारी लबार, सिरमौर शीलनिधि खरीदार॥
रघुवर उदार कहिये पुकार, तू है हमार, तू है हमार।

× × ×

सखी सुनु इक अचरज की बात।
कहत लजाउँ पाइ सूने मोहिं कोउ इक आवत जात॥
श्याम स्वरूप किशोर अवस्था पीत बसन फहरात।
नयनन चोट करैं अति तीखी मन्द मन्द मुसकात॥

आवन नीक लगै अति मोहीं जाबु न नेकु सुहात ।
बिनु पहिचान प्राण ते प्यारो मनहुं पुरातन नात ॥
चतुर सखी उपदेसेउ अस मोहिं रोम रोम पुलकात ।
अरी सुहागिनि सिय पिय भूली याते भव भटकात ॥
एक बार कैसेहु पिय पाऊँ दिन होवे या रात ।
नेह अली नहिं चरण छाँड़िहौं सरित-सिंधु की भाँत ॥

× × ×

अस कहि आलि एक सकुचाइ ।
बेगि धारिअ पाउँ प्यारी हमहिं मातु रिसाइ ॥
फेरि आउब ठाउँ एही कालि अवसर पाइ ।
सीख सखि की सुनि सुहावनि सीय कह मुसकाइ ॥
नेह नातो सांवरो सन धोखेहू जुड़ जाइ ।
कोटि कोटि प्रपंच माया छुअत छाँहि डेराइ ॥
मातु पितु परिवार सुख समपत्ति मान बड़ाइ ।
जोग जागत कृपा मोरी आपु जाहिं हिराइ ॥

नेह अलि तेहि समय कंचन बन रमन रुख पाइ ।
अष्ट सखि सजि सजि सुमंगल सीय सहित सिधाइ ॥

× × ×

तुम बिनु जन के जी की पीर ।
को बूझै प्रभु करुणा सागर दीन बन्धु रघुबीर ॥
जोगी जनक कही जो बातें लगीं कलेजे तीर ।
प्रभु अपमान देख मैं बैठा रहूँ बना तस्वीर ॥
कैसे कहा जाहु उठि ग्रह सब विद्यमान रघुबीर ।
क्या समझा था आए हैं याँ सब अपजसी, फकीर ॥
लिखा न बिधि बैदेहि बिबाहू शब्द हैं या शमशीर ।
हेतुबाद जनु चहत साम की मेटन कुलिस लकीर ॥
आज्ञा होए तो सब के देखत डारौं अजगो चीर ।
हरीशरण परिणाम रावरे हाथ बदहु प्रणधीर ॥

❀ गीत ❀

भगवन बही उल्टी गङ्ग ।
वेह कहते नौ नजर आते हैं ७॥ सोए, मनहु पी के भङ्ग ।
नाम तो है राम आए नहिं किसी के काम, रंगे नहिं गुरू के रंग ।
साथ है सारंग बंबकहिं देखि अजगो भंग, बुद्धी भ्रष्ट के हैं ढंग ।
क्रोध अरु अपमान के कर गिरो राखि स्वरूप, आए रंग बीच कुरंग ।
चहत लेहुं छिनाए फरसा, तूण धनु मृगचर्म, देऊँ दान में सत्संग ।
मनुज, तापस, पितर, योगी, हरी, हर, हरिशरण, देखहिं चलत सीधी गङ्ग ।

❀ दोहा ❀

मुनि मरीचि के शिष्य तव, राज मंत्र जिन प्राण
तप स्वरूप क्या हैं यही, भृगु कुल पंकज भान

❀ छन्द ❀

अभिमान क्रोध फिर इतना क्यों,क्यों मन में बोध नहीं आया ।
करुणा सागर कल्याण धाम, शिव भक्त का पद कैसे पाया ।
श्री राम नाम के नाते से भगवान विष्णु ने धनुष दिया ।
तब भी सुख सिन्धु स्वयम्बर में दिगअम्बर हाहाकार किया ।
जो मदन दहन के पास हृदय की ग्रंथि खुलाने जाते थे ।
इस रंग भूमि में आने का हरगिज़ आदेश न पाते थे ।
भृगु कुल भूषण की दशा देखि दिल मैं रह रह कर आता है ।
लक्ष्मण कल्याण करो इनका तेरा परलौकिक नाता है ।
याते सुखदानी हे स्वामी आज्ञा जो आपकी पाऊँ मैं ।
दे ज्ञान हँस अज्ञान ध्वंस करि परशुधरहिं समझाऊँ मैं ।
उन दोनों प्रेतों को स्वामी सुन्दर भूषण पहनाऊँ मैं ।
अपमान और कटु बाणी से हँस हँस कर खूब सजाऊँ मैं ।

❀ कवित्त ❀

आपको डिराउँ नाथ काल को खिलाउँ खेल,
भार्गव दिवाकर को हिमकर बनाऊँ मैं
वेद को प्रकाश और जीवन सुख राशि नाथ,
आनन्द की गङ्ग की तरंग सी बहाऊँ मैं
नौ गुण सुहाए जौन विप्र में दिखात मौन,
हरीशरण तौन भली भांति से जगाऊँ मैं
आज्ञा जो होए नाथ फरसा छुड़ाए हाथ,
अब ही भृगुनाथ माथ चरण में झुकाऊँ मैं

ततपश्चात्

बोले परशुधरहिं अपमाने

ललो के कर कमलन जयमाल ।
सँग सलोनी सुघर सखी गण गावत गीत रसाल ॥
प्रेम बिबस पहिराउब भूलेउ निकट देखि रघुलाल ।
ज्यों ज्यों छिन पल जात होत हैं रघुबर हाल बेहाल ॥
नत मस्तक पिय भरे सीय के कर कोमल को ख्याल ।
नेह अली तुरतहिं हँसि प्यारो पी कहँ कियो निहाल ॥

× × ×

दोऊ राजत बीच अँगनवा ।
जनक नन्दिनी दुलहिन श्री कौसिल्या सुत दुलहनवाँ ॥
ब्रह्म धाम शिवपुरी स्वर्गहू अरु बैकुण्ठ महनवाँ ।
छाड़ि छाड़ि धाए सुख सेवन शंकर सरिस सुजनवाँ ॥
रमा चंचला स्थिर शारद मुख नहिं आव बचनवाँ ।
शंकर प्रिया मगन भई ऐसी सुध नहिं रही अपनवाँ ॥
जनक जाति न्योछावर करहीं भूषन वसन रतनवाँ ।
सुर समूह सेवा हित बरसहिं फुलवा नन्दन बनवाँ ॥

दम्पति अति अनुराग पखारहिं स्यामल गौर चरनवाँ।
देखत सुनत कहत सुख जेतो कवि किमि करै कथनवाँ॥
फिरत भावरी जगमगाहिं प्रतिछाहीं मणि खम्बनवां।
अँग अँग पर होहिं निछावर कोटिन रती मदनवाँ॥
रूप माधुरी निरखहिं अलिगन अपलक किये नयनवाँ।
सुकृत मनावहिं बाढ़इ इन कर सुख सुहाग सै गुनवाँ॥
अधिक अधिक को उरझै पचि पचि कोटिन किये जतनवाँ।
नेह अली एहि ध्यान मगन रहि जाबु बजाय निसनवाँ॥

× × ×

बने की मन्द मन्द मुस्कान।
तापै अति अटपट चितवनियाँ
अमी हलाहल मद बरसनियाँ
दुबिधा में हैं प्रान हमारे
भूल गई औसान॥ बने की
कथन करत कुल कान नसाहीं
मौन रहे मन मानत नाहीं

सूझै नहिं हित हान
दई री जान चहत है जान ॥ बने की

नेह अली तकु शरण चरण सिय
जिय की जरन जुड़ैहैं सबु पिय

मोहन मन्त्र महान
कहहिं शिव शारद शेष सुजान

× × ×

दुलहे अब काहे सकुचाओ ।
वैसेहि चितै तिरीछे नयनन फेरि फेरि मुसकाओ ॥
तुम तो चतुर रसिक हो साजन अंतरयामि कहाओ ।
उरझि उरझि हिय में गस जाएँ ऐसे तीर चलाओ ॥
तुम पूछहु औषधि मैं माँगौं घोर राम रस लाओ ।
नेह अली यह जोग जगै जब घूँघट तुमहिं हटाओ ॥

× × ×

याते स्याम रङ्ग पिय पाए।
विद्युत बरन सीय मुख शोभा अधिक अधिक अधिकाए॥
अवलोकत प्रतिबिम्ब कपोलन मध्य पीयु मुसकाए।
नील गगन महँ शिशु रवि मण्डल पूरन चन्दु बसाए॥
पिय प्यारी श्रङ्गार परस्पर सेवा को सक गाए।
नेह अली कँह जानि किंकरी स्वामिनि कछुक लषाए॥

× × ×

आँख देखो तो किनसे निगोड़ी लड़ी।
इस ढिटाई पै मैं जाऊँ लाजन गड़ी॥
मेरी करनी कड़ी उनकी करुणा बड़ी।
मैं हूँ बिष बेलि वह हैं सजीवन जड़ी॥
अब तो आठों पहर उनके दर पै गड़ी।
उनको चिलमन में रहने की मुश्किल पड़ी॥
हाय बदनाम करने पै उनको अड़ी।
आँसुओं की दिखाती हूँ सबको झड़ी॥

हरिशरण आश अंचल पसारे खड़ी ।
नाथ दे दो वही जो शिला पे पड़ी ॥

× × ×

दुलहे सिय मुख नेकु निहारो ।
जो कछु तुम्हरे पास होए प्रिय
तजि सकोच सोई वारो ॥
आज परो है अटपट अवसर
मन मँह इष्ट संभारो ॥
नेह अली पिय चितै सीय तन
हँसि कह तुमहिं बिचारो ॥
का मम सरवस का मैं वारौं
काहे छिपी उघारो ॥

× × ×

कन्या हम जोगिन की आहीं ।
इहौ सत्य हम बसहिं आज दिन नगरी जोगिन माहीं ॥

हमरे गुरू महा जोगी जिन ब्रह्मा सीस नवाहीं।
हमहूँ छैल ऽनादि काल से एकै जोग जगाहीं॥
पै हम नाहिन उन जोगिन महँ नूपुर शब्द रमाहीं।
नाहिन मुख मण्डल प्रकाश गति जेहिं निरखत अघाहीं॥
शिव सनकादि शेष जेहि साँगो पाँगो ध्यान न पावहिं।
पारब्रह्म सोइ हमरे हितदुइ रूप धरै जग माहीं॥
सोइ सोइ भाव दिखावै नाचै जोइ जोइ नाच नचाहीं।
कतहुं तुच्छ सेवा से रीझै कतहुं मान मन माहीं॥
पुष्प लेत श्रम बिन्दु पिनाकहिं तोरत कौतुक माहीं।
चरित करत अनुकूल हमारे डारि बैठ गल बाँहीं॥
हम जोगिन सोइ दुलहे की जो कोहबर महँ सरमाहीं।
नेह अली चुप रहु छोटे मुंह बड़ी बात भल नाहीं॥

× × ×

रसिया रस की बात करो।
रसिक शिरोमणि जल अगाध तहँ मम मन मीन डरो॥

क्रूर कुटिल कायर कुजाति पर करुणा कृपा करो ।
हौं संमुख नत दोउ कर जोरे माथे हाथ धरो ॥
मैं परि पायँ मनाउँ विविध विधि तुम, बलि, मान करो ।
मैं तलफहुं तुम तिरछे नयनन हिय हँसि हेरि हरो ॥
मैं लाजन मर जाउँ पीउ तुम बहियाँ ताकि धरो ।
निज पट नाथ निवारहु निरखत नयनन नीर भरो ॥
देखि देखि छरछंद रावरे साँची समुझ परो ।
नेह अली मध्यस्त सीय जू जो चह दाँव खरो ॥

× × ×

मिथला की राजकिशोरी के दुलहे की अदा बताते हैं ।
हमने तो सरवस मान लिया पर वह दिन रात रुलाते हैं ॥
चितवन की गहरी चोट करे और ऊपर से मुसकाते हैं ।
हम आह करें वह वाह करें हम रोते हैं वह गाते हैं ॥
हों मेहरबान बीमारों पर अपने जब वह हो जाते हैं ।
सपने में आकर कभी कभी जखमों पर नमक लगाते हैं ॥

कुछ अजब मज़ा उस दर्द में है उनके बीमार बताते हैं।
यह अमर रहे अँचल पसार कर आठों पहर मनाते हैं॥
अचरज की कैसी बात सखी निर्गुण क्यों इन्हें बताते हैं।
इनके तो रोम रोम नख सिख ते गुण से भरे दिखाते हैं॥
हरिशरण दुहाई स्वामिनि की देते ही बस में आते हैं।
गोया नाज़ो नखरे पी के तीखे फीके पड़ जाते हैं॥

× × ×

बनरे मुख छबि मन दर्पन में।
अवलोकहु जेहि देखत साजन को मोह त्रिभुवन में॥
मोतिन मोर मुकुट माथे पर कनकफूल कानन में।
मन्द मन्द मुस्कान मनोहर जुलुम भरी जुलफन में॥
चितवन चपल चुरावत चित्तहिं, बलि, बातहिं बातन में।
कोटिन काम निछावर होहीं हँसि हँसि प्रति अँगन में॥
नेह अली पिय इहै मनोरथ रहनि सदा अगहन में।
नित्य सिया जू सहित भाँवरी फेरहु हिय आँगन में॥

× × ×

सजन तुमको मिथला से जाने न देंगे ।
हम अपनी महा निधि छुड़ाने न देंगे ॥

करेंगे तुम्हारी टहल जानो दिल से ।
अवध की तुम्हें याद आने न देंगे ॥

तुम्हें दिल दिया है तुम्हारा रहेगा ।
किसी ग़ैर को पास आने न देंगे ॥

तुम्हें देख कर और क्या देखना है ।
किसी को नजर में समाने न देंगे ॥

तुम्हारी खुशी से खुशी है हमारी ।
हम आँखों को आँसू बहाने न देंगे ॥

हैं पितु मातु सम श्री जनक राय रानी ।
वह रोवाँ तुम्हारा दुखाने न देंगे ॥

जो मंजूर हो तो चलें साथ हम सब ।
तुम्हें बेवफ़ा हम कहाने न देंगे ॥

अली नेह चरणों में रति हो हमारी ।
तो बैकुण्ठ की बात आने न देंगे ॥

× × ×

बने के बने बसंतो ठाट ।
सुन्दर खौर केसरिया सोहै तैसइ तिलक ललाट ॥
पीत बसन भूषन भोगादिक पीत हाट अरु बाट ।
पीत पत्र पुष्पादि पीत जल थल कमला के घाट ॥
अस बसंत बगरत नहिं देख्यो सुन्यो न रूप बिराट ।
यह महिमा मिथलेश सुता की गावहिं शिव जिमि भाट ॥
सकल सखी सेवहिं सुख सागर खोले हृदय कपाट ।
नेह अली सिय संग सोह पिय जनु बसंत सम्राट ॥

× × ×

साँचो सावन आज लगोरी ।
झूलत हिल मिलि श्यामल गोरी ॥
हर उर बसत सोई दशरथ सुत ।
आदि शक्ति मिथिलेश किशोरी ॥
बिरजा पार सोई सरजू तट ।
साज समाज सकल रस बोरी ॥

चक चितवन सुर गण जुग डोरी ।
शोभा जनु बैकुण्ठ बटोरी ॥
दामिनि दमकत गरजत घोरी ।
सिय डरपत पिय हँसि मुख मोरी ॥
निज निज सेवा लावहिं अलिगन ।
झमक झुलावहिं अनुपम जोरी ॥
नेह अली हरि हर सों जांचत ।
सुख सुहाग इन्ह कल्प करोरी ॥

× × ×

रघुबर हिय हिंडोल हमार ।
प्रभु मिलन की आश डोरी गुरु शबद की डार ॥
प्रीति, लाज, प्रपन्नता विश्वास दासी चार ।
एक मति पिय एक गति को हौं किये शृङ्गार ॥
स्वाँस वीणा मृदङ्गादिक झांझ की झनकार ।
प्रिया प्रीतम प्रेम पावन गान कलि मल हार ॥

देखि डोलन लाग दोऊ गले बहिंया डार।
नेह अलि प्रभु झूलिये सिय सहित प्राण अधार॥

× × ×

मन की मानो महमानी
पिय प्रेम परख पहिचानी
बैसाख चैत गुण गाऊँ—फुलबंगला जेठ सजाऊँ
रथ नगर असाढ़ दिखाऊँ—सावन झूला डलवाऊँ
जव बरसे रिम-झिम पानी॥
भादों जल बिहार तैयारी—रचि क्वांर रास बलिहारी
कातिक पाँसा पैसारी—अगहन मण्डप पगुधारी
दुलहा दुलहिन सुखखानी॥
भर पूस माघ सुविचारूँ—कब फागुन होरी जारूँ
मुख पर अबीर रंग डारूँ—पिय सरवस तुम पर वारूँ
छिन पहिनो सारी धानी॥

करि अवध सरिस रजधानी-चिर राज करहु लासानी
तुम राजा सिय महरानी—मैं टहल करूँ कुरबानी
हाजिर खिदमत पेशानी ॥
तुम रस बरसहु रसखानी—मैं मीन फिरूँ तैरानी
कहुं ऊपर कहूँ लुकानी—सुख सागर बीच हिरानी
प्रीतम दर्शन दीवानी ॥
तुम मान करहु मनमानी—मैं चरण रहूँ लपटानी
अरु बिनय करूँ बर बानी—अँखियाँ भरि हिय हुलसानी
तउ करिये आना कानी ॥
अलि नेह भगत नहिं ज्ञानी—साधन एकौ नहिं जानी
फिर हठ केहि बल पर ठानी—यह सोच जबै अकुलानी
सिय चितै कृपा मुसकानी ॥

× × ×

माने नहीं बिनु देखे जियरवा ।
ऐसी हठ कछु ठान लई है,
धसत न कैसेहु रूप दुसरवा ।

मन्द मन्द मुसकान मनोहर,
सिय पिय के अरुनारे अधरवा ॥
भाल तिलक की शोभा न्यारी,
नील कमल बिच सोह केसरवा ।
अरुण सीस जनु दामिनि दमकैं,
नासा मणि रघुलाल पियरवा ॥
रतनारे उज्ज्वल कजरारे,
ढाए रहें तिहुं काल कहेरवा ।
नेह अली चूमत दोउ तरवा,
दीन जनन के हितकर घरवा ॥

× × ×

कसकत करेजवा में काहू के नयन कोर ।
तापै नित जफा जोर, मची रहत झकाझोर,
देखि देखि तर्ज तौर, मौन रहूँ मन मरोर ।
कैसे देहुं उनहिं खोर, जान परैं चूक मोर,
पीट पीट पै ढिंढोर, बीच बाट करहुं शोर ॥

लौट जाहु वाहि ओर, जोश वलवले बटोर,
यहां नियम अति कठोर, माथ देहु बिनु बहोर ॥
देखि दीन दशा मोर, कोइ करे क्यों निहोर,
कैसे कहूँ चित्त चोर, अवध श्याम बय किशोर ॥
एक आस एक जोर, शरण जाबु हुइ बिभोर,
पइयां परि गोर गोर, सबुइ कहब सत निचोर ॥
सुनिये रघुलाल बली, करबो, बलि, भाए भली,
नेह अली जनक लली, सौंप दई बाग डोर ॥

× × ×

हौं मैं जनकपुर को दास ।
देखि गुरु अति दीन राखेहु सीय चरनन पास ॥
कहेहु जनि छांड़ेहु चरन तोहिं नाहि कवनिहु त्रास ।
जपेहु सीताराम निसि दिन मान करि विश्वास ॥
हरिशरण चारों पदारथ छांड़ि एकै आस ।
सीय पी के एक नूपुर माहिं पावौं बास ॥

× × ×

विरथा कितनी बीत गई है।
री रसना सिय राम राम जपु नहिं कछु देर भई है ॥
जनि डरु, नत, छल छाड़ि, मानु, प्रभु मूरत कृपा मई है।
शरण गये आपन करि रखि हैं नहिं यह बात नई है ॥
नेह अली विश्वास मान जिय अब चुप साध लई है।
मिथला ते नाता जोड़े सिय पिय गति केहि न दई है ॥

× × ×

अवध और मिथला के एक ही शहर हैं।
यह साकेत जाने के मक़बूल दर हैं ॥
यहां के बिहारी जुगुल रूप धर हैं।
हैं गुल प्राण प्रीतम तो प्यारी इतर हैं ॥
हैं रघुलाल माहिर लली जी हुनर हैं।
बहर राम रघुनाथ सीते लहर हैं ॥
वही सब में बैठे वही सब के घर हैं।
मगर सब कहे हैं कहां हैं किधर हैं ॥

वह दुष्टों के दल को क़यामत क़ह्‌र हैं।
मगर अपने दासों के मादर पिदर हैं॥
अली नेह तेरे भजन तो सिफ़र हैं।
यह क्या कम जो तुझ पर उचटती नज़र हैं॥

× × ×

जगतपत अवधपत सियापत वहीं है।
न उपमा कोई अपने तदवत वही है॥
जो सब से बड़ा गोद में वह पड़ा है।
हँसी की भी है बात हैरत वही है॥
हसीनों का हाकिम रइसों का राजा।
गरीबों की अपनी बरकत वही है॥
अवध में कुंआरा तो मिथला में दूल्हा।
भरे स्वांग दण्डक में बिलपत वही है॥
जो मूंदो तो सम्मुख जो खोलो तो ग़ायब।
मैं कुरबान अनुपम शरारत वही है॥

वहीं पर है जोगी वही वीर भोगी।
अली नेह रसिकों की सदगत वही है॥

× × ×

जले पर न दीखे मुहब्बत वही है।
जो पूछो तो दिल की हरारत वही है॥
किये कोटि सिजदे लिये साथ अरमां।
अचल ध्यान चरणों में है नत वही है॥
जिसे दिल दिया उससे कुछ भी न चाहे।
कनाअत नहीं बादशाहत वही है॥
नियम, ज्ञान, तप, मख बिना दर्द उफलत।
अली नेह नीरस इबादत वही है॥

× × ×

लघु देवर मोरे सुनत भूले लषन अपान।
निज नातो चाहहिं सुनब रघुबंसी रसखान॥
कौतुक मोद बिनोद हित पिय हिय की सिय जान।
सैनहिं सखिन बुझाइ जनु छांड़े दोउ सर तान॥

लषन रहे धरि ध्यान रघुबर की गति को कहै ।
सिय अधरन मुसकान अलि गन सब बावरि भईं ॥
धरि धीरज तब एक सखी बोली परम सुजान ।
सुख सुहाग तुम दोउ कहँ अचल करहिं भगवान ॥
नेह अली सुनि जल परेउ मानहुं सूखत धान ।
प्रीतम प्यारी प्रीति रस करहिं परस्पर पान ॥

× × ×

भेष बिलोकत पीयु को सखी रही अरगाए ।
नेह अली पूजन लगी पी प्रतिमा परि पाए ॥
एक कहै मुख मोड़ि कै बैठि सखी के पास ।
नेह अली नीको नहीं नारिन सों उपहास ॥
एक जोरि जुग पाणि फिर बैठी सहज उदास ।
नेह अली सोउ धन्य है है जेहि एकहि आस ॥
एक क्रीट कुण्डल लिये धनुष तूण अरु तीर ।
नेह अली हम सबन्ह कहँ काह कहत रघुबीर ॥

करुणानिधि निज अनुचरिनि की अनन्य गति देख।
नेह अली हिय हर्ष सिय पिय दिय तजि सो भेष ॥

नेह अली कर जोर बिनय करहुं पिय बिविध त्रिधि।
जेहि अनन्य गति तोर तहँ परपंच न कीजिये ॥

× × ×

झलके हिय के हिये छिपाऊँ।
रस अनमोल भरे हैं याते नित्य सुहाग मनाऊँ ॥

मत्य कहीं हैं दुइ पति मोरे तउ पतिव्रता कहाऊँ।
निर्गुण ब्याहि कर्म मन बाणी सरगुन मांग भराऊँ ॥

कागद कलम मसी नहिं एकौ सुन्दर चित्र बनाऊँ।
देखा, सुना, गुना नहिं जाको कर गहि हिये बिठाऊँ ॥

मन बुद्धि बानी नहिं पावै ता कहँ मौर धराऊँ।
नेह अली नातो जौ सांचो सांचिहि अलष लषाऊँ ॥

× × ×

❀ सिद्धान्त ❀

दुनियाँ माने या न माने ।
जिन नयनन नीर नहीं बरस्यो,
कबहूँ नहिं हर्ष हिया हुलस्यो ।
जहँ अंकुर प्रेम नहीं निकस्यो,
वह राम रूप को क्या जाने ॥ दुनियां ॥१॥

नहिं सेई संत सभा सादर,
नहिं समुझहिं सेवक सचराचर ।
जिसने नहिं जाना घर बाहर,
वह राम रहस्य को क्या जाने ॥ दुनियां ॥२॥

जे प्राकृत कविता धार बहे,
रघुनाथ चरित्र न भूलि कहे,
जिन्ह अनरस ही रस मान लिये,
वह सरस राम रस क्या जाने ॥ दुनियां ॥३॥

जिन्ह लोभ समुद्र न सोष लिये,
नहिं क्रोध हलाहल पान किये,
नहिं जीव से ईश समान भये,
वह राम नाम को क्या जाने ॥ दुनियां ॥
महिपाल तो एक ते एक भये,
ऐश्वर्य्यवान गुणवान हुए,
पर मनु को भाव न जे समुझे,
वह राम राज्य को क्या जाने ॥ दुनियां ॥५॥
जिन्ह कारण काग गती न लषे,
गुरु संत कृपा रस जे न चखे,
हनुआदि न रामाकार दिखे,
वह राम-धाम को क्या जाने ॥ दुनियां ॥६॥
जिनके हिय श्री हनुमंत लाल,
नहिं भाव सहित कबहूँ आने ।
वह मन्द भाग प्राणी श्री सीताराम
तत्व को क्या जाने ॥ दुनियां ॥७॥

हरिशरण विमुख जे सङ्ग संत,
कहु कैसे होए अज्ञान अंत।
नहिं वरहि साय की श्रुति कहंत,
वह सियाराम को क्या जाने ॥ दुनिया ॥८॥

जे डूब गये मारीच कूप,
हठ कहते कहते कुंवर भूप।
तजि बैठे जे अपना सरूप,
पर ब्रह्म राम को क्या जाने ॥ दुनिया ॥९॥

हनु उदधि नाघ गढ़ लंक गये,
पुर जारि शुभाशुभ भोग दये।
मणि सौंपि प्रभुहिं पद सीस नये,
जे तर्क करहि कलि काल जए।
बस इती बात प्रभु रिनी भये,
वह राम पिया को क्या जाने ॥ दुनिया ॥१०॥

बहु पूजे शंकर पंचानन,
गजबदन षटानन, चतुरानन।
लोकप, रिषि, शायी धरा धरन,
देवेन्द्र, शक्ति, सुर, रमा रमन।
पै हरी न काहू जिया जरन,
भटके दर दर बहु किये जतन।
गुरु संत, बचन, नहिं किए श्रृवन,
कबहूँ नहिं एक ते लगी लगन।
नहिं जनक लली को लई सरन,
वह राम चरन को क्या जाने ॥ दुनिया ॥११॥

जो हाड़ मास के दीवाने।
कहने को बुध कलि मल साने॥
जे काया ही आपन माने।
श्रृङ्गार केश काजर जाने॥
जे सारासार न पहिचाने।
वह राम भजन को क्या जाने ॥ दुनिया ॥ १२ ॥

जँह कबहुं सुमति मन आई ना ।
अरु निर्मल नहिं मन आईना ॥
जिनके छल छिद्र मनाई ना ।
जे साँची सुरत मनाई ना ॥
जहँ भूलि दीनता आई ना ।
वह राम सरन को क्या जाने ॥ दुनियां ॥ १३ ॥

जिन बिरहा अग्नि चिताई ना ।
असुअन की धार बहाई ना ॥
जग त्याग समाधि लगाई ना ।
कल कीरति रघुपति गाई ना ॥
गति अनन्यता अपनाई ना ।
वह राम प्रेम को क्या जाने ॥ दुनियां ॥ १४ ॥

आनन्द सिन्धु पेचाँ कैसा ।
सुख सागर में तूफाँ कैसा ॥
जो सब में व्याप्त अयाँ कैसा ।
नै रंग न रूप बयाँ कैसा ॥
पर बासी दरे जहाँ कैसा ।
आजन्मा तिलफ़ जवाँ कैसा ॥
जिसने यह राज़ नहीं जाना ।
वह राम जन्म को क्या जाने ॥ दुनिया ॥ १५ ॥

क्यों आया क्या कोई लाया ।
यह किसके दिल में क्या आया ॥
रोया, धोया, नाचा, गाया ।
किस माता ने सपूत जाया ॥
किस बल पर इतना इतराया ।
पर ब्रह्म का दिल भी भर आया ॥
भय्या वह वत्व न जे जाने ।
वह राम जन्म को क्या जाने ॥ दुनियां ॥ १६ ॥

क्या हुआ बहुत श्रृङ्गार किये ।
अरु रुचिर रूप का भार लिये ॥
पतिव्रता धर्म नहीं गड़े हिये ।
नहिं एक के होकर मरे जिये ॥
बिनु निर्मलता का पत्र लिये ।
पी पास गई अभिमान हिये ॥
निज कर सब जोग कुजोग किये ।
इस लिये नाक दी कान दिये ॥
जिस पर स्वामिनि की नज़र नहीं ।
वह राम नज़र को क्या जाने ॥ दुनिया ॥ १७ ॥

बिनु कारण जाने काज कहा ।
बिनु राजा जाने ताज कहा ॥
नहिं जाना फूल तो गंध कहा ।
बिनु मायापति छरछंद कहा ॥

बिनु सागर जाने रत्न कहा ।
बिनु बारिद जल को बिन्दु कहा ॥
बिनु फणि को जाने मणी कहा ।
बिनु संघरषन के अग्नि कहा ॥
बिनु पय जाने नवनीत कहा ।
परतीत नहीं तो प्रीत कहा ॥
बिनु भाव हृदय मँय भक्ति कहा ।
बिनु राम भजन के मुक्ति कहा ॥
बिनु संत्त सङ्ग भगवंत कहा ।
बिनु राम तत्व हनुमंत कहा ॥
इदमित्थं राम न जे जाने ।
वह रामदास को क्या जाने ॥ दुनियां ॥ १८ ॥

जिसने नहिं मिथला जन्म लिया,
नहिं सीय से नाता गाढ़ किया।
नहिं निज स्वरूप पर ध्यान दिया,
वह दूल्हा राम को क्या जाने॥ दुनिया॥१९॥

श्री अवध छोड़ वनबास लिया,
संतानक बन आबाद किया।
इक दिन फूलन श्रृंगार किया,
क्यों सुरपति सुत ने वार किया।

क्या कामद गिरि का राजा था,
या शंकर से कुछ साझा था।
जो पड़ा है निज भ्रम घेरे में,
जो सूरज कहे अंधेरे में।
निनन्यानाँवें के फेरे में,
वह राम रास को क्या जाने॥ दुनिया॥२०॥

ताके जुग पद कमल मनाऊँ ।
जासु कृपा निर्मल मति पाऊँ ॥



★ जिन्होंने सिखाया उन्हीं को समर्पण ।
लली श्रम लला को दिखाता है दर्पण ॥ ★★

हरिशरनलाल कक्कड़—बाँदा

जनकसुता जगजननि जानकी ।
अतिशय प्रिय करुणा निधान की ॥

मुद्रक:—रामसेवक खड़ग, स्वाधीन प्रेस, झांसी ।